सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

खंड 2 अंक 4 | जून 2014 | केवल निजी प्रसार हेतु

एमबीए छात्रों ने बालुतार स्थित एनएचपीसी स्थल का दौरा किया

ड०. प्रदीप कुमार दास द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

23 मई 2014 को संकाय सदस्य ड०. प्रदीप कुमार दास, ड०. कृष्ण मुरारी एवं ड०. ए.रवि प्रकाश के साथ सिक्किम विश्वविद्यालय के प्रबंधन विभाग (एमबीए द्वितीय सेमेस्टर) के छात्रों ने एनएचपीसी लिमिटेड (तीस्ता वी), बालुतार, पूर्वी सिक्किम एवं डिकछु बांध स्थल का दौरा किया. दौरा की पहल ड०. प्रदीप कुमार दास , संकाय, प्रबंधन विभाग एवं श्री प्रशांत कुमार साहू, उप प्रबन्धक, मैकेनिकल, एनएचपीसी लिमिटेड, बालुतार, तीस्ता वी, परियोजना द्वारा की गई थी. भ्रमण के अलावा छात्रों को वरिष्ठ प्रबंधक, इलेक्ट्रिकल और अन्य अधिकारियों के साथ बातचीत करने का अवसर मिला, जिससे उन्हें संगठन के दिन–प्रतिदिन के प्रबंधन की जटिलताओं को समझने में काफी मदद मिली. तीस्ता वी एनएचपीसी परियोजना 2008 में 510 मेगावाट बिजली उत्पादन के साथ चालू किया गया था.

तीस्ता वी पावर स्टेशन हमारे देश के लिए एक बड़ा वरदान है क्यूंकि यह पूर्वी ग्रिड को बिजली प्रदान करता है. यह सिक्किम को 12ः निरू शुल्क बिजली भी प्रदान कर रहा है और इसे अलग से स्वास्थ्य, शिक्षा एवं वनानिकरण कार्यक्रम जैसे क्षेत्रों में सीएसआर गतिविधियों को भी एनएचपीसी द्वारा चालू किए जाते हैं.

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सीमाओं पर आयोजित कार्यशाला

प्रो. ज्योति प्रकाश तामाड. द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट

सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग, जीवन विज्ञान विद्यापीठ, सिक्किम विश्वविद्यालय ने 24 मई से 25 मई 2014 तक सिक्किम सरकार के पर्यटन विभाग के सभागार में ‘‘विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सीमाएं : एकीकृत जैव प्रौद्योगिकी और आणिवक जीवविज्ञान‘‘ विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया. यह कार्यशाला जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और धर्मशास्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित की गई थी. इस कार्यशाला में 157 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण किया और सूक्ष्म जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान, उदयानिकी एवं रसायन शस्त्र विभाग के छात्रों सहित संकाय सदस्यों ने भाग लिया. प्रतिभागियों में पूर्वोत्तर के विभिन्न विश्वविद्यालयों से 11 पोस्ट– ड०क्टरेट विद्वान, क्षेत्रीय जैव–संसाधन एवं स्थायी विकास केंद्र के वैज्ञानिक, सिक्किम विश्वविद्यालय तथा सिक्किम सरकारी महाविद्यालय के कुछ शिक्षण एवं गैर शिक्षण सदस्य भी शामिल थे .

सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के छात्रों द्वारा प्रस्तुत विश्वविद्यालय स्तुति गीत के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया था. कार्यशाला के संयोजक तथा सिक्किम विश्वविद्यालय के जीवन विज्ञान विद्यापीठ के डीन प्रो. ज्योति प्रकाश तामाड. ने आमंत्रित वक्ताओं एवं उपस्थित दर्शकों का स्वागत किया. प्रो. तामाड. ने सिक्किम को इसकी स्थलाकृति तथा कम दूरी में ऊंचाई भिन्नता के कारण जीवित जीवों (पौधे, पशु, मानव और सुक्ष्म जीवों) के लिए एक जैविक हब एवं प्राकृतिक प्रयोगशाला के रूप में रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि बड़ी इलायची, अदरक, संतरा, सेब, विभिन्न किस्म की देशी मिर्च, देशी पत्तेदार सब्जियों, चाय, जातीय खाद्य और पेय पदार्थ, खाने योग्य बांस की टहनी और मशरूम, खाने योग्य जंगली पौधों और उनके फल, जंगली शहद, पशु मांस और नदी की मछली, गाय और याक के दूध इस क्षेत्र के खाद्य संसाधन हैं. अ०र्किड सहित औषधीय और सुगंधित पौधें, जंगली और घरेलू सजावटी पौधें सिक्किम के लिए आय का स्रोत हैं. पर्यावरण पर शून्य प्रभाव के साथ जैव संसाधनों

Editorial Board

Pooja Gupta(JMC)
Anne Mary Gurung(Political Science)
Jay Kumar(Law)
Ajaykumar N(English)
Vaidyanath Nishant(English)
Rajeev Rajak(Geology)

का वाणिज्यिक उपयोग समग्र विकास के लिए जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर निर्भर करते हैं. उन्होंने हिमालय के सतत विकास हेतु जैव प्रौद्योगिकी के विषय में एक ठोस नीति की आवश्यकता पर बल दिया. ड०. विनोद कुमार, निदेशक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, नई दिल्ली विभाग कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा उन्होने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भ. ारत सरकार के विभिन्न अनुसंधान एवं विक. ास कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला.ड०. सुनील कौल, मुख्य वरिष्ठ अनुसंधान वैज्ञानिक, जैव चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय उन्नत औद्योगिक विज्ञ. ान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईएसटी) टीसुक. बा, जापान ने दर्शकों को डीएआईएलएबी (उन्नत जैव औषधी के लिए डीबीटी–एआईएसटी अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला) के बारे में बताया और एआईएसटी तथा भारत के अन्य प्रयोगशालाओं की सहयोगात्मक अनुसंधान गतिविधियों को रेखांकित किया.

प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो राकेश भटनागर, डीन, जैव प्रौद्योगिकी विद्यापीठ, जेएनयू, नई दिल्ली ने की और इस सत्र की शुरुआत ''मो. र्टलीन – एन एचएसपी 70 स्ट्रैस कैप्रोन इन ह्यूमन कार्सिनोजेनेसिस'' विषय पर ड०. रेणु वाधवा, ग्रुप लीडर, जैव चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय उन्नत औद्योगिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईएसटी) टीसुकबा, जापान के व्याख्यान से हुई. ड०. के.पी. मोहन कुमारा, मुख्य वैज्ञानिक, भारतीय रासायनिक जीव विज्ञान संस्थान, कोलकाता ने ''स्नायु अपक्षयी रोगों से निपटान हेतु भारतीय पारंपरिक औषधि यों आयुर्वेद का प्रयोग'' विषय पर व्याख्यान दिया. ड०. के.एम. पनिकर, निदेशक, अगरकर अनुसंधान संस्थान, पुणे ने ''एडवांसेस इन नैनोबायो टेक्नोल०जी : बायोइंस्पायार्ड इनोवेशन'' विषय पर व्याख्यान दिया. दूसरे तकनीकी सत्र ड०. योशिहिरो ओहमिया निदेशक, जैव चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय उन्नत औद्योगिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईएसटी) टीसुकबा, जापान की अध्यक्षता में हुई.

ड०. सुनील कौल, एआईएसटी, जापान ने ''उम्र बढ़ने और कैंसर पर अश्वगंधा के लाभों का विज्ञान'' पर व्याख्यान दिया. प्रो अशोक पांडेय, उप निदेशक, सीएसआईआर– राष्ट्रीय अंतर्विषयक विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेन्द्रम, ने ''भारत में जैव ईंधन की दूसरी पी□ी का उत्पादन : स्थिति एवं दृष्टिकोण'' विषय पर चर्चा की . ड०. डी.सुंदर, बायोकेमिकल इंजीनियरिंग और जैव प्रौद्योगिकी विभ. ाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली ने के ''मानव चिकित्सा विज्ञान के लिए प्रोटीन डिजाइन पर कुशलता प्राप्ति'' विषय पर व्याख्यान दिया. ड०. प्रताप के. पाती, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ने ''विथेनिया सोम्निफे. रा (एल) डूनल के वाणिज्यिक मूल्य के सुधार में जैव प्रौद्योगिक हस्तक्षेप'' विषय पर व्याख्यान दिया.

तीसरे तकनीकी सत्र प्रो अशोक पांडेय की अध्यक्षता में हुई. ड०. योषिहिरो ओहमिया, जापान ने ''बायोलुमिनेसेन्स प्रणाली के उपयोग के सेल आधारित परख एवं इमेजिंग'' विषय पर चर्चा की . प्रो. गुरुचरण कौर, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, अमृतसर

संपादक की कलम से

2014 का मई महिना विश्वविद्यालय के लिए विशेष रहा. नए शिक्षकों की एक ब□ी संख्या विश्वविद्यालय में शामिल हो गए और कक्षाएं लेने लगे. साथ ही शैक्षणिक वर्ष 2014–15 के लिए दाखिले के लिए अधिसूचना प्रकाशित हो गया है और आवेदन प्रपत्र और पाठ्यक्रम विवरणिका भी अब जारी किए जा रहे है. आवेदन पत्र ऑनलाइन (विश्वविद्यालय वेब साइट पर) उपलब्ध है और प्रशासनिक खंड में भी उपलब्ध हैं. आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 27 जून 2014 है.

डॉ. धनीराज छेत्री, डीन, छात्र कल्याण सहित एक केंद्रीय प्रवेश समिति पहले ही गठित की गई है और प्राप्त आवेदन पत्रों क सत्यापन इसी समिति करेगी और तदनुसार विभागीती प्रवेश समिति के पास भेजे जाएंगे. पहले से ही जगह में है और प्राप्त आवेदनों रूपों इस समिति द्वारा सत्यापित और तदनुसार विभागीय प्रवेश समितियों को भर में भेजा जाएगा.प्रवेश प्रक्रिया 31 जुलाई 2014 से पहले पूरी हो जाएगी और अगले शैक्षणिक सत्र 1 अगस्त 2014 से शुरू होगा. इसी बीच संकाय सदस्य शिक्षण की अंतिम तैयारी और सत्रीय परीक्षा एवं टर्म पेपर के आयोजन में व्यस्त हो रहे हैं . संक्षेप में, यह सभी विभागों और छात्रों के लिए व्यस्त समय है. इस समय गंगटोक में गर्मी ब□ रही है और सामयिक बारिश से गर्मी से राहत मिल रही है. विभिन्न विद्यापीठों में अध्ययन बोर्ड की बैठक आयोजित हो चुकी है जिसमें एकीकृत कार्यक्रम सहित विभिन्न कॉलेजों में अंडर ग्रेजुएट कोर्स और विभागों के लिए संशोधि ात पाठ्यक्रम अनुमोदन के लिए पारित किया गया है. स्कूल बोर्डों द्वारा योग्य शोधार्थियों से सीनॉप्सिस भी ले ली गई है.

इस दौरान अन्य गतिविधियां जैसे सेमिनार, संगोष्ठी और कार्यशालाओं की संख्या कम होना स्वाभाविक ही था. हालांकि, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग इस संबंध में अपवाद था और इस अंक में विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे हैं हमेश की तरह ऐनी मेरी गुरुंग ने इस अंक में भी कुछ चित्र प्रदान किया है.

डॉ. वी. कृष्ण अनंत
(संपादकीय बोर्ड के वास्ते)

ने ''न्यूरोप्रोटेक्टिव क्षमता के साथ प्राकृतिक उत्पादों की खोज'' विषय पर भाषण दिया. प्रो. नारायण एस. पुणेकर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान , ब०म्बे ने ''कवक के लिए आणविक उपकरणों'' विषय पर व्याख्यान दिया. प्रो. राकेश भटनागर, जेएनयू ने ''क्लोन के नैदानिक परीक्षण से एंथ्रेक्स के खिलाफ अनुवांशिक रूप से डिजाइन'' विषय पर व्याख्यान दिया. प्रो ज्योती प्रकाश तामाड. ने ''किण्वित खाद्य पदार्थों का अध्ययन करने के लिए प्रोटोक०ल की आधुनिक अवधारणा'' पर चर्चा की. कार्यशाला का उद्देश्य जैव चिकित्सा अनुसंधान पर केंद्रित जैविक विज्ञान में वर्तमान प्रौद्योगिकियों के बारे में दर्शकों को व्याख्यान शृंखला के माध्यम में सूचना देना था. कार्यशाला के दो दिनों के दौरान छात्रों को एकीकृत जैव प्रौद्योगिकी और आणविक जीवविज्ञान के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से आयोजित विभिन्न व्याख्यानों के माध्यम से उन्हें बहुत ज्ञान मिला.

ड०. एच.के. तिवारी, विभागाध्यक्ष, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग ने सभी आमंत्रित वक्ताओ. को पारंपरिक खदा पहनाया और धन्यवाद ज्ञापन किया. छात्रों और संकाय सदस्यों ने प्रख्यात जैविक वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की.

प्रकाशन

श्री शैलेश शुक्ला, हिंदी अधिकारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका षशिक्षायनष (पृष्ट सं 48) के 7वें अंक में 'याद आता है मुझे' और 'दे सकते हो ?' शीर्षक से 2 कविताएं प्रकाशित

कार्टून क०र्नर